अखिलेश पालरिया

मापदंड

इ-मेल-akhileshpalria@gmail.com

दो सहकर्मी बहुत दिनों बाद रेलवे स्टेशन पर टकरा गए। दोनों की सेवानिवृत्ति भी हो चुकी थी। समान पद, समान वेतन होने पर भी दोनों का रहन-सहन अलग था। एक दिखावा पसंद तो दूसरा परोपकारी।

पहले वाले ने कहा, "मैं ट्रेन के बजाय प्लेन से जाना पसंद करता हूँ। ट्रेन से जाना हो तो फर्स्ट एसी या फिर सेकण्ड एसी से लेवल कम नहीं।"

परोपकारी ने कहा, "लेवल अपने ऊपर खर्च करने से नहीं, औरों के लिए खर्च करने पर बढ़ता है भाई।" कहते हुए वे आगे बढ़ गए।

तरीका

चलती ट्रेन में एक भिखारिन सबकी खुशामद कर रही थी, "भगवान भला करे, गरीब को कुछ दे दो...ए माई, ए बाई, दे दो ना कुछ।"

अधिकतर यात्रियों ने उस पर ध्यान नहीं दिया।

तभी एक किन्नर दस-बीस के नोटों को ताश के पत्तों की तरह उंगलियों में दबाये बोगी में आया और तूफानी अंदाज में बोला, "भाई, फटाफट जेब से दस का नोट निकालो..." ऐसा करते हुए वह विशेष चिर-परिचित अंदाज में चुटकी व ताली भी पीटता...

अब सारा काम छोड़कर यात्रियों के हाथ जेब में रखे बटुए पर थे और दृष्टि किन्नर पर।

दीवाली की सफाई

दो सखियों ने दीवाली की राम-राम के दिन एक दूसरे को फोन पर बधाई दी।

एक ने खुशी जताई, "इस बार तो हमने सफाई के साथ-साथ रंग-रोगन भी करा दिया।"

दूसरी भी खुश थी। बोली, "हमने रंग-रोगन तो न कराया लेकिन इस बार सास-ससुर को वृद्धाश्रम छोड़ ही आए।"